चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	11.02.25	5	1-5

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाएं

हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज प्रशिक्षणार्थियों एवं अधिकारियों के साथ •जागरण

जागरण संवाददाता•हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) चंडीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को खिसकता जा रहा है।

भूजल की कमी चिंता का विषय : क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहां लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। वैश्विक स्तर पर, भूजल निष्कर्षण कुल निकासी का 33 प्रतिशत है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	11.02.25	3	3-4

एचएयू: जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे पर कार्यक्रम

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय : प्रो. बीआर काम्बोज

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि कॉलेज के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में विवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड, चंडीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर पीने के स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	11.02.25	3	1-3

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का आया समय : प्रो. कांबोज

एचएयू में जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर कार्यक्रम का शुभारंभ

संवाद न्यूज एजेंसी

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केंद्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चंडीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज मुख्यातिथि रहे।

मुख्यातिथि प्रो. कांबोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरंतर गिरनता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

एचएयू में प्रशिक्षणार्थियों व अधिकारियों के साथ कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। स्रोत : संस्थान

क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहां लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, संपदा अधिकारी एवं मुख्य अभियंता डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, केंद्रीय भूजल बोर्ड, चंडीगढ़ से डॉ. राकेश राणा, डॉ. साकिब आजमी, डॉ. आयुष केशरवानी डॉ. अमनदीप कौर व डॉ. गार्गी वालिया उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	11.02.25	5	1-3

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय : प्रो. काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रशिक्षणार्थियों व अधिकारियों के साथ।

हकृवि में जलभृत प्रबंधन व स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर कार्यक्रम का शुभारम्भ

हिसार, 10 फरवरी (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) चण्डीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। पारंपरिक जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को हमने आधुनिकता के दबाव में त्याग दिया। लेकिन आज जल संरक्षण को एक राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय आ गया है। क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहां लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। वैश्विक स्तर पर, भूजल निष्कर्षण कुल निकासी का 33 प्रतिशत है, जो कृषि (42 प्रतिशत), घरेलू (36 प्रतिशत) और औद्योगिक (27 प्रतिशत) आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण और इसके प्रभावी प्रबंधन के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है।

प्रतिभागी भूजल मूल्यांकन, निगरानी और पुनर्भरण के लिए आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, साथ ही टोपोशीट का उपयोग करके भूभौतिकीय सर्वेक्षण और जल विज्ञान संबंधी मूल्यांकन में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। प्रशिक्षण प्रतिभागियों को प्रभावी भूजल प्रबंधन के लिए जीआईएस और रिमोट सेंसिंग के उपयोग से भी परिचित कराएगा। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सम्पदा अधिकारी एवं मुख्य अभियंता डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, केन्द्रीय भूजल बोर्ड, चण्डीगढ़ से डॉ. राकेश राणा, डॉ. साकिब आज़मी, डॉ. आयुष केशरवानी डॉ. अमनदीप कौर व डॉ. गार्गी वालिया उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	11.02.25	2	4-6

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय : प्रो. काम्बोज

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रशिक्षणार्थियों एवं अधिकारियों के साथ

हिसार, 10 फरवरी (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड चंडीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को खिसकता जा रहा है। पारंपरिक जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को हमने आधुनिकता के दबाव में त्याग दिया। लेकिन आज जल संरक्षण को एक राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय आ गया है।

क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहाँ लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। वैश्विक स्तर पर, भूजल निष्कर्षण कुल निकासी का 33 प्रतिशत है, जो कृषि (42 प्रतिशत), घरेलू (36 प्रतिशत) और औद्योगिक (27 प्रतिशत) आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण और इसके प्रभावी प्रबंधन के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है। प्रतिभागी भूजल मूल्यांकन, निगरानी और पुनर्भरण के लिए आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया।

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	11.02.25		

जल संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय- प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी)चण्डीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने

हकृवि में तीन दिवसीय जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर कार्यक्रम का शुभारंभ

के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को खिसकता जा रहा है। पारंपरिक जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को हमने आधुनिकता के दबाव में त्याग दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	10.02.25		

जल का उचित प्रबंधन और संरक्षण को राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय : काम्बोज

हकृवि में तीन दिवसीय जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर कार्यक्रम का शुभारंभ

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) उत्तर पश्चिमी क्षेत्र, चण्डीगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में 'जन भागीदारी द्वारा जलभृत प्रबंधन एवं स्थानीय भूजल मुद्दे' विषय पर तीन दिवसीय द्वितीय स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। कृषि महाविद्यालय के सभागार में आयोजित इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज मुख्यातिथि रहे। केन्द्रीय भूजल बोर्ड, (सीजीडब्ल्यूबी) चण्डीगढ़ के क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज प्रतिभागियों एवं अधिकारियों के साथ

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने कहा कि भूजल के अति दोहन के कारण जल स्तर निरन्तर गिरता जा रहा है। इसलिए कृषि के लिए जल की उपलब्धता एक मुख्य समस्या के रूप में उभरकर आ रही है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी तरह जारी रहा तो आने वाले समय में सिंचाई तो दूर की बात, लोगों को पीने के लिए स्वच्छ जल की भारी कमी हो सकती है। उन्होंने बूंद-बूंद पानी का सदुपयोग करने के साथ जल उपयोग दक्षता के लिए टपका सिंचाई व फव्वारा सिंचाई को अपनाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि इसी कड़ी में विश्वविद्यालय की ओर से समय-समय पर जल संरक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर सभी को पानी की कम से कम खपत करने के लिए प्रेरित किया जाता है। कृषि के लिए जल एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जल का उचित प्रबंधन व संरक्षण करके ही आने वाली पीढ़ियों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है। जल की लगातार बढ़ती खपत के चलते कृषि क्षेत्र के लिए जल की मात्रा घट रही है। शहरों में भूजल स्तर लगातार नीचे को खिसकता जा रहा है। पारंपरिक जल संरक्षण के व्यावहारिक उपायों को हमने आधुनिकता के दबाव में त्याग दिया। लेकिन आज जल संरक्षण को एक राष्ट्रीय दायित्व के रूप में अपनाने का समय आ गया है।

क्षेत्रीय निदेशक विद्या नंद नेगी ने कहा कि दुनिया भर के कई सिंचित क्षेत्रों में, जहाँ लाखों लोग रहते हैं, भूजल की कमी एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है। वैश्विक स्तर पर, भूजल निष्कर्षण कुल निकासी का 33 प्रतिशत है, जो कृषि (42 प्रतिशत), घरेलू (36 प्रतिशत) और औद्योगिक (27 प्रतिशत) आवश्यकताओं को पूरा करता है। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण और इसके प्रभावी प्रबंधन के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ाना है। प्रतिभागी भूजल मूल्यांकन, निगरानी और पुनर्भरण के लिए आधुनिक तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे, साथ ही टोपोशीट का उपयोग करके भूभौतिकीय सर्वेक्षण और जल विज्ञान संबंधी मूल्यांकन में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। प्रशिक्षण प्रतिभागियों को प्रभावी भूजल प्रबंधन के लिए जीआईएस और रिमोट सेंसिंग के उपयोग से भी परिचित कराएगा।

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने कार्यक्रम में सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढींगड़ा, सम्पदा अधिकारी एवं मुख्य अभियंता डॉ. एमएस सिद्धपुरिया, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य, केन्द्रीय भूजल बोर्ड, चण्डीगढ़ से डॉ. राकेश राणा, डॉ. साकिब आज़मी, डॉ. आयुष केशरवानी डॉ. अमनदीप कौर व डॉ. गार्गी वालिया उपस्थित रहे।